भारतीय जन संचार संस्थान (सम विश्वविद्यालय), नई दिल्ली

एवं

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय सेमिनार

"हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष: विरासत से नवाचार तक"

17-18 सितंबर, 2026

आयोजन स्थल: बाल गंगाधर तिलक सभागार, भारतीय जन संचार संस्थान (सम विश्वविद्यालय), अरूणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली – 110067

शोध-पत्र आमंत्रण

भारतीय जन संचार संस्थान (सम विश्वविद्यालय), नई दिल्ली द्वारा भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार **"हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष: विरासत से नवाचार तक"** हेतु देशभर के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थानों, मीडिया शिक्षण संस्थाओं तथा स्वतंत्र शोधकर्ताओं से मौलिक एवं अप्रकाशित शोध-पत्र आमंत्रित किए जाते हैं।

सेमिनार का उद्देश्य हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की यात्रा का ऐतिहासिक, वैचारिक, भाषिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवं लोकतांत्रिक दृष्टि से समग्र मूल्यांकन करना है। इस संदर्भ में शोध प्रस्तोताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे विषय की नवीन, तथ्यपरक एवं शोधपरक व्याख्या प्रस्तुत करें तथा भविष्य के विमर्श को समृद्ध करें।

सेमिनार की अवधारणा

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास भारतीय समाज की लोकतांत्रिक चेतना, सांस्कृतिक विकास, सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्रीय पुनर्जागरण का इतिहास भी है। 30 मई 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित उदन्त मार्तण्ड से आरम्भ हुई हिन्दी पत्रकारिता ने पिछली दो शताब्दियों में जनमत निर्माण, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय एकता, भाषाई विकास और लोकतांत्रिक मूल्यों के संवर्धन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह यात्रा केवल समाचारों के प्रकाशन तक सीमित नहीं रही, बल्कि भारतीय समाज के विचार-विमर्श, जनजागरण और सार्वजनिक संवाद की सशक्त परंपरा के रूप में विकसित हुई है।

प्रारम्भिक काल में हिन्दी पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य भारतीय समाज में शिक्षा, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार था। उदन्त मार्तण्ड, समाचार सुधावर्षण तथा अन्य प्रारम्भिक पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा को सार्वजनिक विमर्श का माध्यम बनाया। 1857 से 1947 के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रताप, आज, नवजीवन, कर्मवीर तथा अनेक अन्य पत्रों ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करने, राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने तथा स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस कालखंड में पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं रही, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय अस्मिता की वाहक बनी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी पत्रकारिता ने संस्थागत विस्तार के नए चरण में प्रवेश किया। समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं के साथ-साथ आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा बाद में निजी समाचार चैनलों ने सूचना के प्रसार को व्यापक बनाया। बदलती सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप पत्रकारिता की भाषा, शैली, संपादन, रिपोर्टिंग तथा प्रस्तुतीकरण में भी उल्लेखनीय परिवर्तन हुए।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया की भूमिका केवल सूचना उपलब्ध कराने तक सीमित न रहकर उत्तरदायी सार्वजनिक विमर्श के निर्माण तक विस्तृत हुई।

इक्कीसवीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने हिन्दी पत्रकारिता के स्वरूप को अभूतपूर्व रूप से परिवर्तित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल पत्रकारिता, मल्टीमीडिया प्लेटफ़ॉर्म, पॉडकास्ट, डेटा पत्रकारिता तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) आधारित तकनीकों ने समाचारों के संकलन, विश्लेषण, प्रस्तुतीकरण और प्रसार की प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। डिजिटल माध्यमों ने पत्रकारिता की पहुँच को वैश्विक बनाया है, वहीं नागरिक पत्रकारिता और वैकल्पिक मीडिया ने संवाद की नई संभावनाएँ भी विकसित की हैं। इसके समानांतर पत्रकारिता अनेक गंभीर चुनौतियों का भी सामना कर रही है। फेक न्यूज़, भ्रामक सूचना, मीडिया स्वामित्व का केंद्रीकरण, व्यावसायीकरण, एल्गोरिद्मिक प्रभाव, डेटा गोपनीयता, डिजिटल नैतिकता तथा प्रेस की स्वतंत्रता जैसे प्रश्न समकालीन मीडिया विमर्श के केंद्र में हैं।

ऐसे समय में हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की ऐतिहासिक यात्रा का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि अतीत के अनुभवों और मूल्यों के आधार पर भविष्य की पत्रकारिता के लिए नई दिशाओं का निर्धारण किया जा सके।

भारतीय जन संचार संस्थान (सम विश्वविद्यालय), नई दिल्ली द्वारा भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) के सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार "हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष: विरासत से नवाचार तक" इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आयोजित किया जा रहा है। यह सेमिनार इतिहास, पत्रकारिता, मीडिया अध्ययन, संचार, भाषा-विज्ञान, अभिलेखीय अध्ययन, डिजिटल मीडिया तथा सामाजिक विज्ञान के विद्वानों, शोधार्थियों, शिक्षकों, पत्रकारों और मीडिया विशेषज्ञों को एक साझा अकादमिक मंच प्रदान करेगा।

इस राष्ट्रीय सेमिनार में हिन्दी पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास, राष्ट्रनिर्माण में उसके योगदान, भाषा एवं शैली के परिवर्तन, प्रिंट से डिजिटल माध्यमों तक की विकास यात्रा, मीडिया के आर्थिक एवं संस्थागत रूपांतरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा पत्रकारिता, मीडिया नैतिकता, नागरिक पत्रकारिता, सामुदायिक भागीदारी तथा भविष्य की पत्रकारिता जैसे विविध आयामों पर गंभीर अकादमिक विमर्श किया जाएगा। विशेष रूप से हिन्दी पत्रकारिता की वैचारिक विरासत, अभिलेखीय स्रोतों, अल्पज्ञात पत्रकारों एवं प्रकाशनों के योगदान तथा समकालीन चुनौतियों के ऐतिहासिक समाधान पर भी विचार किया जाएगा।

यह सेमिनार केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि विरासत और नवाचार के मध्य एक सृजनात्मक संवाद स्थापित करने का प्रयास है। इस आयोजन के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता के दो सौ वर्षों की उपलब्धियों का सम्यक् मूल्यांकन करते हुए भविष्य की पत्रकारिता के लिए नए शोध-विमर्श, नीतिगत सुझाव और अकादमिक सहयोग की संभावनाओं को प्रोत्साहित किया जाएगा। साथ ही, चयनित शोध-पत्रों के प्रकाशन के माध्यम से मीडिया इतिहास एवं पत्रकारिता अध्ययन के क्षेत्र में स्थायी शैक्षणिक योगदान सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाएगा।

हमें विश्वास है कि यह राष्ट्रीय सेमिनार हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास, वर्तमान और भविष्य के मध्य एक सशक्त सेतु का कार्य करेगा तथा मीडिया अध्ययन और ऐतिहासिक अनुसंधान के क्षेत्र में नए विमर्श, नई दृष्टि और नवीन शोध-आयाम स्थापित करेगा।

सेमिनार के उद्देश्य, मुख्य विषय एवं तकनीकी सत्र

सेमिनार के उद्देश्य

राष्ट्रीय सेमिनार "हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष: विरासत से नवाचार तक" का उद्देश्य हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की ऐतिहासिक यात्रा का समग्र मूल्यांकन करते हुए उसके बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा लोकतांत्रिक योगदान का बहुआयामी अध्ययन करना है। यह सेमिनार इतिहास, मीडिया अध्ययन, संचार, भाषा, अभिलेखीय अध्ययन तथा डिजिटल मीडिया के विद्वानों के मध्य अंतर्विषयक (Interdisciplinary) संवाद को प्रोत्साहित करेगा।

- हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा का समग्र एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- उदन्त मार्तण्ड से डिजिटल पत्रकारिता तक हुए विकासक्रम का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्र निर्माण तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका का अध्ययन करना।

- हिन्दी पत्रकारिता के विकास में योगदान देने वाले प्रमुख एवं अपेक्षाकृत कम चर्चित पत्रकारों, संपादकों तथा प्रकाशनों के योगदान को रेखांकित करना।
- भाषा, शैली, संपादन, रिपोर्टिंग तथा समाचार प्रस्तुतीकरण में समय के साथ हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डेटा पत्रकारिता तथा नई संचार तकनीकों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- फेक न्यूज़, मीडिया नैतिकता, प्रेस की स्वतंत्रता, मीडिया स्वामित्व तथा सूचना की विश्वसनीयता जैसी समकालीन चुनौतियों पर गंभीर विमर्श करना।
- युवा शोधार्थियों, मीडिया शिक्षकों, पत्रकारों तथा नीति-निर्माताओं के मध्य ज्ञान-साझाकरण एवं शोध सहयोग को प्रोत्साहित करना।
- हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास से प्राप्त अनुभवों के आधार पर भविष्य की पत्रकारिता के लिए नए विमर्श एवं नीति-सुझाव विकसित करना।
- हिन्दी पत्रकारिता से संबंधित नवीन शोध, अभिलेखीय स्रोतों एवं अप्रकाशित दस्तावेजों को अकादमिक समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करना।

तकनीकी सत्रों के मुख्य विषय एवं उपविषय

तकनीकी सत्र-I: हिन्दी पत्रकारिता का ऐतिहासिक विकास एवं राष्ट्रनिर्माण में योगदान

- उदन्त मार्तण्ड से आधुनिक समाचार माध्यमों तक हिन्दी पत्रकारिता की विकास-यात्रा
- हिन्दी पत्रकारिता और भारतीय नवजागरण
- स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी समाचार-पत्रों की भूमिका
- राष्ट्रवादी पत्रकारिता की परंपरा
- सामाजिक सुधार आंदोलनों और हिन्दी पत्रकारिता
- स्वतंत्रता संग्राम के पत्रकार एवं संपादक
- भारतीय लोकतंत्र के निर्माण में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान
- हिन्दी पत्रकारिता का अभिलेखीय अध्ययन

तकनीकी सत्र-II: भाषा, शैली एवं रिपोर्टिंग का इतिहास एवं विकास

- साहित्यिक हिन्दी से जनभाषा तक की यात्रा
- समाचार लेखन की बदलती शैली
- संपादकीय लेखन की परंपरा
- रिपोर्टिंग के मानकों में परिवर्तन
- मीडिया भाषा एवं समाज
- अनुवाद पत्रकारिता
- पत्रकारिता की भाषिक संरचना
- डिजिटल युग में हिन्दी भाषा की चुनौतियाँ

तकनीकी सत्र-III: प्रिंट से डिजिटल तक : आर्थिक एवं संस्थागत रूपांतरण

- समाचार-पत्र उद्योग का विकास
- मीडिया स्वामित्व एवं कॉर्पोरेट संरचना
- डिजिटल मीडिया का व्यवसाय मॉडल
- विज्ञापन आधारित मीडिया अर्थशास्त्र
- सदस्यता (Subscription) मॉडल
- सार्वजनिक प्रसारण एवं निजी मीडिया
- मीडिया स्टार्टअप एवं स्वतंत्र पत्रकारिता
- मीडिया उद्योग की नई प्रवृत्तियाँ

तकनीकी सत्र-IV: डिजिटल युग की नैतिक चुनौतियाँ एवं इतिहास में निहित समाधान

- फेक न्यूज़ एवं तथ्य-जांच
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और पत्रकारिता
- डेटा पत्रकारिता
- एल्गोरिद्मिक समाचार वितरण
- मीडिया नैतिकता एवं उत्तरदायित्व
- प्रेस की स्वतंत्रता
- डिजिटल गोपनीयता
- साइबर पत्रकारिता एवं विधिक चुनौतियाँ

तकनीकी सत्र-V: पत्रकारिता एवं सामुदायिक भागीदारी : जनचेतना की ऐतिहासिक परंपरा

- जनपक्षधर पत्रकारिता
- ग्रामीण पत्रकारिता
- सामुदायिक रेडियो एवं विकास संचार
- स्थानीय मीडिया और लोकतंत्र
- नागरिक पत्रकारिता
- हाशिए के समुदायों का प्रतिनिधित्व
- महिला एवं लैंगिक विमर्श
- मीडिया और सामाजिक उत्तरदायित्व

तकनीकी सत्र-VI: हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य : ऐतिहासिक विरासत से निर्मित नई दिशाएँ

- भविष्य की हिन्दी पत्रकारिता
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं स्वचालित समाचार लेखन
- मोबाइल पत्रकारिता
- पॉडकास्ट एवं डिजिटल स्टोरीटेलिंग
- मल्टीमीडिया पत्रकारिता
- वैश्वीकरण और हिन्दी मीडिया
- वैकल्पिक एवं स्वतंत्र मीडिया
- मीडिया साक्षरता एवं लोकतंत्र

विशेष अकादमिक सत्र (Plenary Session):
विषय*:* हिंदी पत्रकारिता शिक्षा: बदलते परिदृश्य, नई दिशाएं एवं समकालीन चुनौतियां

दिशा-निर्देश एवं प्रक्रियाएँ

सारांश प्रस्तुत करने के दिशा-निर्देश

सारांश 200–250 शब्दों का होना चाहिए तथा उसमें निम्नलिखित बिंदु स्पष्ट रूप से सम्मिलित हों—

- शोध-पत्र का शीर्षक (अधिकतम 16 शब्द)
- लेखक का नाम, संस्थान एवं विभाग, ई-मेल एवं मोबाइल नंबर
- शोध का उद्देश्य, अध्ययन का महत्व, शोध-पद्धति, अध्ययन का संक्षिप्त विवरण एवं संभावित निष्कर्ष
- 4–6 प्रमुख शब्द (बीज शब्द)

नोट*:* शीर्षक, सारांश तथा *Keywords* हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किए जाएँ।

प्रतिभागिता की श्रेणियाँ एवं पात्रता

प्रतिभागिता की श्रेणियाँ: शोध-पत्र, विश्लेषणात्मक लेख, विद्वत्तापूर्ण निबंध, अभिलेखीय/पांडुलिपि आधारित अध्ययन, आलोचनात्मक संपादन एवं अनुवाद, मीडिया इतिहास से संबंधित प्रलेख।

कौन आवेदन कर सकता है? विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी (पीएच.डी.), पोस्ट-डॉक्टोरल शोधकर्ता, पत्रकार एवं मीडिया विशेषज्ञ, इतिहासकार एवं सामाजिक वैज्ञानिक तथा स्वतंत्र शोधकर्ता।

सारांश चयन की प्रक्रिया

प्राप्त सभी शोध-सारों का मूल्यांकन विशेषज्ञ समिति द्वारा द्वि-गोपनीय शैक्षणिक समकक्ष समीक्षा (डबल-ब्लाइंड अकादमिक पीयर रिव्यू) प्रक्रिया के माध्यम से किया जाएगा। विषय की प्रासंगिकता, मौलिकता, शोध-पद्धति की स्पष्टता एवं अकादमिक गुणवत्ता के आधार पर चयन किया जाएगा। समीक्षा के उपरांत ई-मेल द्वारा स्वीकृति-पत्र भेजा जाएगा।

पूर्ण शोध-पत्र (Full Paper) हेतु दिशा-निर्देश एवं प्रारूप

स्वीकृत सारांश के आधार पर पूर्ण शोध-पत्र आमंत्रित किए जाएँगे। अनिवार्य भाग: शीर्षक, लेखक का नाम एवं संस्थान, सारांश, मुख्य शब्द (Keywords), भूमिका, शोध उद्देश्य, शोध-पद्धति, विश्लेषण एवं चर्चा, निष्कर्ष, संदर्भ सूची।

विवरण	मानक
अधिकतम शब्द सीमा	8,000 शब्द
Font & Font Size	Unicode (Mangal), Size: 12 (Heading: 14 Bold)
Line Spacing & Page Layout	1.5 Spacing, A4 Page Size, 1 Inch Margin
File Format	MS Word एवं PDF

मौलिकता (Originality) एवं लेखक घोषणा

शोध-पत्र पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए। साहित्यिक चोरी (Plagiarism) स्वीकार्य सीमा से अधिक पाए जाने पर शोध-पत्र अस्वीकृत कर दिया जाएगा। शोध-पत्र का Similarity Index UGC के प्रचलित मानकों के अनुरूप होना चाहिए। लेखक यह घोषणा करेंगे कि पत्र मौलिक है, किसी अन्य स्थान पर विचाराधीन नहीं है और सभी सह-लेखकों की सहमति प्राप्त है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ एवं प्रेषण

कार्यक्रम	तिथि
सारांश जमा करने की अंतिम तिथि	**10 अगस्त 2026**
सारांश स्वीकृति की सूचना	12 अगस्त 2026
पूर्ण शोध-पत्र जमा करने की अंतिम तिथि	**05 सितंबर 2026**
शोध-पत्र स्वीकृति की सूचना	08 सितंबर 2026
ऑनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि	**12 सितंबर 2026**
राष्ट्रीय सेमिनार	17–18 सितंबर 2026

शोध-पत्र भेजने का माध्यम:
ई-मेल: ichrseminar.iimc2026@gmail.com
विषय (Subject Line): National Seminar 2026 – Abstract Submission या National Seminar 2026 – Full Paper Submission (केवल स्वीकृत शोध पत्रों के लिए)

शोध-पत्र प्रकाशन नीति (Publication Policy)

विशेषज्ञ समिति द्वारा चयनित शोध-पत्रों का प्रकाशन ISBN युक्त संपादित पुस्तक (Edited Volume), समकक्ष-समीक्षित (Peer-Reviewed) सम्मेलन कार्यवाही (Conference Proceedings) या विशेष शोध-पत्रिका (Special Issue) के रूप में किया जाएगा।

पंजीकरण, शुल्क, भुगतान एवं सामान्य निर्देश

पंजीकरण (Registration): सारांश की स्वीकृति के उपरांत प्रतिभागियों को ऑनलाइन पंजीकरण करना होगा। सक्षम अधिकारी की प्रशासनिक अनुमति के पश्चात लिंक प्रतिभागियों को दे दिया जाएगा।

पंजीकरण शुल्क (Registration Fee)

प्रतिभागी श्रेणी	शुल्क
शिक्षक / अकादमिक (Research Paper Presenter)	₹800/-
शोधार्थी / पीएच.डी. शोधार्थी (Research Paper Presenter)	₹500/-
सह-लेखक / श्रोता (Co-author / Listener)	₹300/-

शुल्क में शामिल सुविधाएँ: उद्घाटन एवं समापन सत्र में सहभागिता, सभी तकनीकी सत्रों में प्रवेश, सम्मेलन किट, चाय/कॉफी एवं कार्यकारी भोजन (Working Lunch), प्रमाण-पत्र, प्रकाशन हेतु विचार एवं डिजिटल कार्यवाही प्रति।

भुगतान का विवरण (Payment Details):
Account Name: Indian Institute of Mass Communication
Account Number: 40321700410 | **Bank:** State Bank of India
Branch: R.K. Puram Branch, Sector-1, Block-7, New Delhi – 110022
IFSC Code: SBIN0001076 | **Payment Mode:** NEFT / RTGS / IMPS / UPI
महत्वपूर्ण: भुगतान के बाद लेन-देन संख्या *(UTR/Transaction ID)* अथवा रसीद संलग्न करना अनिवार्य है।

रद्दीकरण एवं धनवापसी: शुल्क अप्रतिदेय (Non-refundable) होगा। शुल्क हस्तांतरित नहीं किया जाएगा।

सामान्य निर्देश एवं यात्रा/आवास: सत्र प्रारम्भ होने से 30 मिनट पूर्व उपस्थित हों। प्रस्तुतीकरण की भाषा हिन्दी होगी (समय: 15-18 मिनट, PPT अनुशंसित)। यात्रा भत्ता (TA/DA) तथा आवास की व्यवस्था आयोजन समिति द्वारा उपलब्ध नहीं कराई जाएगी।

संपर्क एवं आयोजक

आयोजन सचिव
राष्ट्रीय सेमिनार "हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष: विरासत से नवाचार तक"
मीडिया एवं संचार अध्ययन केन्द्र, भारतीय जन संचार संस्थान (सम विश्वविद्यालय)
अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली – 110067
📧 **E-mail: cemcor.iimc.2024@gmail.com** | 🌐 **Website:** https://www.iimc.gov.in